International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधीवादी दर्शनएवं मूल्यों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता : युवाओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

डॉ. मक्खन लाल नायक
सह आचार्य (राजनीति विज्ञान विभाग)
राजकीय शाकम्भर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभर लेक, जयपुर (राजस्थान)
(Affiliated to Rajasthan University Jaipur, Rajasthan)
Mail Id : drmakkhanlal48@gmail.com

लेख सार : क्या गांधी दर्शन के संबंध में प्रासंगिकता का सवाल बेमतलब नहीं है? नैतिक नजरिए से अगर हम देखें तो गांधी को बुद्ध और ईशा की कोटि में रखा जा सकता है, क्योंकि गांधी ने जिन नैतिक मूल्यों पर जोर दिया है वह बौद्ध और ईसाई नैतिक मूल्यों से अलग नहीं है? पर बुद्ध और ईशा की प्रासंगिकता के संबंध में कभी किसी ने प्रश्न नहीं उठाया। फिर यह सवाल गांधी के बारे में ही क्यों उठाया जाता है? गांधी खुद अपने को एक सनातनी हिंदू कहते थे और सनातन हिंदू धर्म में सनातन नैतिक मूल्यों को कबूल किया गया है। ये वे सामान्य मूल्य हैं जो देश, काल और पात्रों के बदल जाने से बदलते नहीं है। ये निरपेक्ष मूल्य हैं। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ऐसे मूल्य हैं जो आमतौर पर सभी के लिए सद्गुणों के रूप में स्वीकार किए गए हैं। कोई भी विकसित धर्म उनको नजरअंदाज नहीं कर सकता ये सनातन मूल्य हर जमाने में जरूरी रहे हैं। गांधी ने इन्हीं केद्रों को कबूल किया है। इसलिए आज के दौर में उनकी प्रासंगिकता ढूंढना एक बेनामी खोज है वह तो सभी युगों में प्रासंगिक है।

लेख भाब्द :गांधीवाद, दर्शन, मूल्य, प्रासंगिकता, विचारधारा,आदर्शवाद, नैतिक,आदर्शात्मकता,व्यक्तिकता, आध्यात्मिक।

प्रस्तावना :

गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक–सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई थी। गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है। यह दर्शन कई स्तरों आध्यात्मिक या धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सामूहिक आदि पर मौजूद है।

इसके अनुसार– 1. आध्यात्मिक या धार्मिक तत्व और ईश्वर इसके मूल में हैं। 2. मानव स्वभाव को मूल रूप से सद्गुणी है। 3. सभी व्यक्ति उच्च नैतिक विकास और सुधार करने के लिये सक्षम हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधीवादी विचारधारा आदर्शवाद पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर जोर देती है। गांधीवादी दर्शन एक दोधारी तलवार है जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है। गांधी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे– भगवद्गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था। गांधी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा। इन विचारों को बाद में ''गांधीवादियों'' द्वारा विकसित किया गया है, विशेष रूप से, भारत में विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण तथा भारत के बाहर मार्टिन लूथर किंग जूनियर और अन्य लोगों द्वारा।

गांधीवादी मूल्यों की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता

आज के जमाने में गांधीवादी केंद्रों पर सवाल उठाया जाना शायद सियासत के नजरिए से जरूरी भले ही हो, गांधी की उपयोगिता को सिद्ध या असिद्ध करके गांधी समर्थक या तथाकथित गांधी विरोधी खेमे राजनीतिक फायदा उठा सकते हैं। सच तो यह है कि गांधी की प्रासंगिकता का प्रश्न उन गांधी विरोधी तत्वों ने ही उठाया है जो गांधी दर्शन को अमहत्वपूर्ण करार देना चाहते हैं। इस सवाल को उठाकर गांधी समर्थक खेमे की स्थिति सुरक्षात्मक बना दी गई है और गांधीवादी बजाय इसके कि वे गांधी विचार को बढ़ावा दे पाऐं, उसका बचाव करने में लग गए हैं। प्रासंगिकता के प्रश्न ने गांधी वाद को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

नैतिक मूल्य हमारे रोजमर्रा के चाल चलन से संबंधित मूल्य हैं। वह हमारे आचरण का बखान नहीं करते, बल्कि उसे कैसा होना 'चाहिए', यह बताते हैं। वे विवरणात्मक न होकर नियोजक है। उनकी अभिव्यक्ति का आधार 'चाहिए' है। किंतु नैतिक मूल्यों का 'चाहिए'–रूप मनुष्य की वास्तविक कुबत की ओर इशारा करता है। उसकी क्षमताओं की ओर संकेत करता है, ना की किसी ऐसी चीज की तरफ जो पाई ही न जा सके। जो अप्राप्य है, आकाश कुसुम है, वह तो मूल्य हो ही नहीं सकता। अहिंसा एक नैतिक मूल्य इसलिए है कि यह हमें अहिंसा बरतनी चाहिए, ऐसा आदेश देता है। किंतु हिंसा में नहीं तो जो 'चाहिए' है वह ठीक इसलिए मुमकिन हो सकता है कि मनुष्य दरअसल अहिंसक हो सकता है। यदि वह अहिंसक न हो सकता तो अहिंसा के संदर्भ में 'चाहिए' बेमतलब हो जाता।

इस प्रसंग में जर्मनी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक कांट की उक्ति– आई ऑट देयरफॉर, आई कैन (मुझे करना चाहिए इसलिए मैं कर सकता हूँ) दृष्टव्य है।

गांधी दर्शन में नैतिक मूल्यों के स्वभाव के इसी पहलू पर जोर दिया गया है। गांधी के अनुसार कोई भी आदर्श ऐसा नहीं होता, जिसे हासिल ने किया जा सके। आदर्श ठीक इसीलिए आदर्श हैं कि उसे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्यवहार में उतारा जा सकता है। नैतिक मूल्य आदर्शात्मक होते हुए भी मानवीय क्षमता के इंसानी कूबतों के परे नहीं है। उन्हें आचरण में आसानी से लाया जा सकता है।

एक बात और परंपरागत चिंतन में जहां नैतिक मूल्यों को कोरे आदर्श के रूप में केवल सैद्धांतिक माना गए हैं वहीं उन्हें 'व्यक्ति' तक ही सीमित कर दिया गया है। किंतु गांधी ने जिस तरह सिद्धांतऔर व्यवहार के विभाजन को खत्म कर दिया, उसी तरह व्यक्ति और समाज के दायित्व को भी अस्वीकार किया है। व्यक्ति से समाज तक एकसूत्रता है। इन दोनों के बीच हम जो भी विभाजन रेखा खींचते हैं, वह हमेशा मनमानी होती है। इसलिए नैतिक मूल्यों को कोई व्यक्ति अपने आचरण में उतार सकता है, तो वे सामाजिक आचरण में भी उतारे जा सकते है, वे समाज के लिए भी उतने ही उपलब्ध हैं। गांधी की नैतिक प्रतिभा खास तौर पर इस बात में है कि उन्होंने नैतिक मूल्यों को कोरी आदर्शात्मकता और निरी व्यक्तिकता से आजाद करके व्यवहारिक जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया। नैतिक मूल्य मानव स्वभाव के सहज सद्‌गुण हैं। वे मनुष्य के सनातन धर्म है। मनुष्य नैतिक सद्‌गुणों से ही इंसान के रूप में अपनी पहचान बनाता है, जिस तरह आग अपनी गर्मी से और पानी अपनी ठंडक से पहचान बनाता है, ठीक इसी तरह मनुष्य अपने सद्‌गुणों से अपनी पहचाना जाता है।

मनुष्य के संदर्भ में गांधी पशुबल और आत्मबल में भेद करते थे। एक जानवर शारीरिक ताकत के अलावा और किसी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता,किंतु मनुष्य में पशुबल के अतिरिक्त आत्मबल भी है, और यही आत्माबल आदमी को जानवरों से अलग करता है। नैतिक मूल्य आत्मबल के पर्याय हैं। अतः वे सहज मानवीय स्वभाव की पहचान भी हैं।

गांधीवादी विचारधारा की वर्तमान में प्रासंगिकता

सत्य और अहिंसा के आदर्श गांधी के संपूर्ण दर्शन को रेखांकित करते हैं तथा यह आज भी मानव जाति के लिये अत्यंत प्रासंगिक है।महात्मा गांधी की शिक्षाएं आज और अधिक प्रासंगिक हो गई हैं जबकि लोग अत्याधिक लालच, व्यापक स्तर पर हिंसा और भागदौड़ भरी जीवन शैली का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं।संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्याँमार में आंग सान सू की जैसे लोगों के नेतृत्व में कई उत्पीड़ित समाज के लोगों को न्याय दिलाने हेतु गांधीवादी विचारधारा को सफलतापूर्वक लागू किया गया है, जो इसकी प्रासंगिकता का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

दलाई लामा ने कहा, ''आज विश्व शांति और विश्वयुद्ध, अध्यात्म और भौतिकवाद, लोकतंत्र व अधिनायकवाद के बीच एक बड़ा युद्ध चल रहा है।'' इन बड़े युद्धों से लड़ने के लिये ये ठीक होगा कि समकालीन समय में गांधीवादी दर्शन को अपनाया जाए।

वर्तमान दौर संर्घश, भाांति व अहिंसा में सर्वाधिक गांधीवाद की प्रासंगिकता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जब पूरे विश्व ने गिरमिटिया श्रम को एक सामाजिक व्यावस्था के रूप में स्वीकार कर लिया था, तब गांधी ने इस प्रथा का पुरजोर विरोध किया था। यही नहीं जब पूरी दुनिया में हिंसात्मक युद्ध छिड़ा हुआ था, तब गांधी ने अहिंसात्मक युद्ध शुरू कर दिया था। उन्होंने हिंसात्मक इतिहास को अहिंसा में बदल दिया। राजनीतिक संघर्ष हल करने के लिए जिस तरह से उन्होंने अहिंसात्मक प्रतिरोध यानी सत्याग्रह का उपयोग किया, इससे हुआ ये कि बाद की दुनिया में राजनीतिक संघर्षों के हल क लिए यह सर्वोत्म माध्यम बन गया। गांधी हिंसात्मक कार्यों के दुष्प्रभावों से अच्छी तरह वाकिफ थे। वह खुद दक्षिण अफ्रीका में बोअर युद्ध और जुलू विद्रोह के दौरान युद्ध के साथ जुड़े हुए थे और तब तक वे दो विश्व युद्ध की विभिषिका से परिचित हो चुके थे। यह याद करने वाली बात है कि 1915 से लेकर 1945 तक कि काल अवधिक को इतिहास में एक महत्वपूर्ण समय माना जाता है। पूरी दुनिया ने माना कि हिंसक तरीके से विवादों को केवल निपटाया जाता है, उस विवाद की जड़ को खत्म नहीं किया जाता। वास्तविकता यह है कि युद्ध में मुद्दों को निपटाने के लिए एक साधन के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। उस समय के विश्व के तमाम छोटे–बड़े नेता प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध और यूरोप में हो रहे कई युद्धों में शामिल थे। लेकिन उसी समया अवधि में जब पूरी दुनिया हिंसात्मक युत्द्ध में उलझी हुई थी और इसी पर उसने अपना विश्वास कायम किया हुआ था, तब ऐसे विपरित परिस्थिति में गांधी अकेले ऐसे शख्स थे, जिन्होंने सोचा था कि युद्ध और हिंसा का अधिक रचनात्मक विकल्प होना चाहिए।

यही कारण है कि गांधी ने नस्लीय भेदभाव के खिलाफ सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में सीधे अहिंसात्मक कार्रवाई शुरू की। यहीं से उन्होंने पूरी दुनिया में सत्य और अहिंसा की वास्तविक शक्ति का सफलतापूर्वक न केवल प्रदर्शन किया बल्कि इसे साबित करने में वे सफल भी रहे। गांधी ने सावधानीपूर्वक दुनिया को अहिंसा के नए रूप से न केवल परिचित बल्कि इसे जीने का एक मार्ग भी बताया। और वे दुनिया के सामने यह सिद्ध करने में सफल रहे कि एक सभ्य समाज के लिए संघर्ष के संकल्प की सबसे व्यावहारिक और शक्तिशाली तकनीक अहिंसा में निहित है। गांधी की अहिंसा स्थिर नहीं है, यह बदलती स्थितियों के लिए विकसित और अनुकूल है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका और भारत में नस्लीय भेदभाव के खिलाफ अपने अहिंसात्मक प्रतिरोध का इस्तेमाल किया। उन्होंने ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ने के लिए अहिंसक तरीकों का इस्तेमाल किया। उन्होंने माना कि "हिंसा किसी दुश्मन को कमजोर कर सकती है, लेकिन यह लोगों को इस एजेंडे को गले लगाने के लिए कतई मजबूर नहीं कर सकती। सत्ता के लिए अपने तरीके से पुराने आदेशों को नष्ट कर सकते हैं, लेकिन आप अपने लोगों को तब तक मुक्त नहीं कर सकते जब तक वे आपको अपनी सहमति नहीं देते।"
एक गरीब आदमी महसूस करता है कि वह अन्य से बेहतर है, वास्तव में वह अंधेरे में है। गांधी आम आदमी की दुर्दशा से बहुत अधिक चिंतित थे। उन्होंने महसूस किया कि हमें वर्तमान स्थिति को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. xIssue x, Month 201x,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बदलना होगा ताकि गरीब व्यक्ति भी सम्मान के साथ अपना सिर उठा सके। ऐसा करने के लिए उन्होंने तीन तरीके खोजे, नफरत के स्थान पर प्रेम का बर्ताव किया जाना चाहिए। लालच को प्यार से बदलें और ऐसे में सब कुछ ठीक हो जाएगा। अगर इसका पालन सच्ची भावना से किया जाए तो यह लोगों के साथ काम करने के लिए एक पेशेवर तरीके से काम करने के विश्वास को और आगे बढ़ाएगा।इसलिए उन्होंने इस बात का आह्वान किया कि ''क्रोध व नफरत को प्यार और करुणा के मूल्य से बदलना चाहिए। हमारे मन में क्रोध और घृणा छा जाती है और हिंसक कार्य करने के लिए उतारु हो जाते हैं।''

गांधी ने इस विनाशकारी वृत्ति को दूर करने का सूत्र दिया कि तर्क मस्तिष्क से आता है और सहानुभूति दिल में रहती है। हमें सत्य का पालन करना है ताकि मस्तिष्क से यह हृदय तक फैल जाए। मस्तिष्क द्वारा प्राप्त किसी भी सत्य को तुरंत हृदय तक भेजना चाहिए। जब तक इसे नीचे नहीं भेजा जाता है, तब तक यह मस्तिष्क के लिए जहर जैसा होता है और पूरे तंत्र को जहरीला बना देता है। इसलिए, मस्तिष्क का उपयोग करने की आवश्यकता है। जो भी प्राप्त होता है उसे तत्काल कार्रवाई के लिए हृदय में प्रेषित किया जाना चाहिए।करुणा और प्रेम के साथ और विरोधी के प्रति बिना घृणा या क्रोध के हम रचनात्मक ऊर्जा उत्पन्न कर सकते हैं। "मानव प्रजातियों की एकता केवल एक जैविक और शारीरिक तथ्य नहीं है, यह तब होता है जब एक बड़ी शक्ति समझदारी से पूरी तरह से मुखर होकर काम करती है।" उन्होंने कहा कि अहिंसा से बढ़कर कोई भी ऐसा हथियार नहीं है, जिसे दृढ़ विश्वास के साथ, साहस के साथ, विश्वास के साथ संभाला जाए। पढ़ना, लिखना आदि लेकिन यह आवश्यक है कि हमें अपने साथियों से प्रेम करने की कला और जीवन जीने की कला भी सीखनी चाहिए।हमें संघर्ष और अस्तित्व के लिए संघर्ष की अवधारणा से पारस्परिक सहायता और सहयोग के लिए आगे बढ़ना है। गांधी के व्यावहारिक विचारों ने लोगों की जरूरतों के साथ प्रकृति के सामंजस्य को एक नई दृष्टि दी है। सत्य और अहिंसा, सरल जीवन और उच्च विचार और समग्र विकास के उनके विचारों से पता चलता है कि प्रकृति और हमारे साथी जीवों को नष्ट किए बिना सतत विकास कैसे संभव है। वह मनुष्य और प्रकृति के बारे में अपने विचारों में स्पष्ट थे और उन्होंने सभी जीवित और निर्जीव प्राणियों के बीच सहजीवी संबंध को समझा। उनका विचार है कि प्रकृति में हर एक को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा है, लेकिन किसी के लालच को संतुष्ट करने के लिए नहीं। आधुनिक पर्यावरणवाद के लिए यह पंक्ति एक महावाक्य बन गई है। गांधी पृथ्वी को एक जीवित जीव मानते थे।

हालही कोरोना महामारी ने हमारी आंखों को वास्तविकताओं से परिचित कराया है। शहर और शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक असुरक्षित हैं। हमारा विकास मॉडल मौलिक रूप से कैसे गलत है। इस संदर्भ में, हम गांधी द्वारा प्रस्तावित विकास के विचारों पर फिर से विचार करने

के लिए मजबूर हैं। उनका आर्थिक दर्शन स्थिर नहीं, बल्कि जीवंत और व्यापक रहा है। यह तकनीक केंद्रित नहीं है, बल्कि जन केंद्रित है। मुट्ठी भर शहरों का विकास हमारी आर्थिक समस्याओं को हल नहीं कर सकता है। वास्तव में यह हमारी समस्याओं को और बढ़ाएगा। इसलिए गांधी ने गांवों के आर्थिक विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। बड़े पैमाने पर उत्पादन की बजाय, उन्होंने छोटे पैमाने पर उत्पादन का सुझाव दिया। केंद्रीकृत उद्योगों के बजाय, उन्होंने विकेंद्रीकृत छोटे उद्योगों का सुझाव दिया। बड़े पैमाने पर उत्पादन केवल उत्पाद से संबंधित होता है, जबकि जनता द्वारा उत्पादन का संबंध उत्पाद के साथ–साथ उत्पादकों से भी है और इसमें शामिल प्रक्रिया से भी है। उनका एक आदर्श गांव का सपना था। बड़े पैमाने पर उत्पादन से लोग अपने गांव, अपनी जमीन, अपने शिल्प को छोड़कर कारखानों में काम करने पर मजबूर हो जाते हैं। गरिमामय जिंदगी और एक स्वाभिमानी ग्राम समुदाय के सदस्यों के बजाय, लोग मशीन के चक्रव्यू में फंस कर रह जाते हैं और मालिकों की दया पर जिंदगी गुजरबसर करने लगते हैं।हमने यह भी देखा है कि इस दौरान प्रवासी श्रमिक के साथ कैसा व्यवहार किया गया। कैसा अमानवीय व्यवहार। हमें अपने महानगरों और पुलों के निर्माण के लिए उनकी आवश्यकता थी लेकिन हम उनकी आवश्यकता नहीं हैं। उन्होंने हमारे जीवन को आसान बना दिया लेकिन हमने उन्हें क्या दिया। यह विनाशकारी विकासात्मक मॉडल प्रवासी लोगों को बेरोजगार करता है।आज, जब हमारे सार्वजनिक जीवन के साथ–साथ हमारे निजी जीवन में नैतिक मूल्यों का गहरा क्षरण हुआ है और जब नैतिक सिद्धांत राजनीति से लगभग गायब हो गए हैं, तो गांधीवादी मूल्य एक प्रभावी विकल्प के रूप में दिखाई देते हैं। अपने समय में गांधी ने न केवल राजनीतिक बल्कि देश को नैतिक नेतृत्व भी प्रदान किया, जो कि अब दुनिया से गायब हो चुका है। मार्टिन लूथर किंग ने सही कहा, "गांधी अपरिहार्य थे। अगर मानवता की प्रगति करनी है, तो गांधी अपरिहार्य हैं। उन्होंने शांति और सद्भाव की दुनिया विकसित करने की ओर प्रेरित किया। हम अपने जोखिम पर गांधी की उपेक्षा कर सकते हैं।"

वर्तमान समय में युवा एवं गांधी दर्शन

सरलता की पराकाष्ठा का व्यक्तित्व एवं जीवन वर्तमान के सामाजिक, राजनीतिक एवं अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उतना ही प्रासंगिक है जितना 100 साल पहले था। हम विकास के पथ पर कितने भी आगे क्यों न बढ़ जाएं किंतु गांधी के सिद्धांतों एवं उनके दर्शन को नकारना असंभव है। जब भी भारतीय समाज की बात होती है तो गांधी दर्शन के बिना अधूरी रहती है।

वर्तमान संदर्भों में जब गांधी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता की बात होती है तो आज चाहे भारत का फैशनेबल युवा हो या किताबी ज्ञान के महारथी आईटी प्रोफेशनल या ग्रामीण बेरोजगार युवा हों, सभी के गांधी प्रिय पात्र हैं। ये सभी गांधी को अपने से जोड़े बगैर नहीं रह सकते हैं।महात्मा गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं जितने अपने वक्त में थे। गांधी का बचपन,

उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचार, सर्वोदय, सत्याग्रह, खादी, ग्रामोद्योग, महिला शिक्षा, अस्पृश्यता, स्वावलंबन एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज के युवाओं के शोध एवं शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र हैं। भारतीय युवा हमेशा से गांधी के चिंतन का केंद्रबिंदु रहा है। वर्तमान युवा पाश्चात्य प्रभावों से संचालित है। उसकी सोच निरकुंश है। वह अपने ऊपर किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता है। ऐसी परिस्थितियों में गांधी के विचारों की सर्वाधिक जरूरत आज के युवाओं को है। गांधी हमेशा युवाओं से रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा रखते थे। गांधी ने उस पीढ़ी के युवाओं को भयरहित कर अंग्रेजों के दमन का सामना करने का अद्भुत साहस दिया था। वे हमेशा युवा ऊर्जा को सही दिशा देने की बात करते थे। आंदोलन के समय वे युवाओं को हमेशा सतर्क करते रहते थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय उन्होंने कहा था हमारा आंदोलन हिंसा का अग्रदूत न बन जाए इसके लिए मैं हर दंड सहने के लिए तैयार हूं, यहां तक कि मैं मृत्यु का वरण करने को भी तैयार हूं। उस समय के युवाओं से उनकी अपेक्षा थी कि वे अपनी ऊर्जा और उत्साह को स्वतंत्रता प्राप्ति में सार्थक योगदान की ओर मोड़ें।गांधी ने हमेशा से युवाओं को वंचित समूहों के उत्थान के लिए प्रेरित किया है। वो व्यक्तिगत घृणा के हमेशा विरोधी रहे हैं। उनका कथन था– ''शैतान से प्यार करते हुए शैतानी से घृणा करनी होगी।'' उन्होंने हमेशा युवाओं को आत्मप्रशंसा से बचने को कहा है। उनका कथन है कि जनता की विचारहीन प्रशंसा हमें अहंकार की बीमारी से ग्रसित कर देती है

वर्तमान आईटी प्रोफेशनल के लिए गांधी मैनेजमेंट गुरु हैं। वे हमेशा आर्थिक मजबूती के पक्षधर रहे हैं। गांधी ने हमेशा पूँजीवादी व समाजवादी विचारधारा का विरोध किया है। उनका मानना था कि देश की अर्थव्यवस्था कुछ पूँजीपतियों के पास गिरवी नहीं होनी चाहिए। उनकी अर्थव्यवस्था के केंद्रबिंदु गांव थे। उनके अनुसार जब तक गांव के युवाओं को गांव में ही रोजगार नहीं मिलता है, तब तक उनमें असंतोष एवं विक्षोभ रहेगा। ग्रामीण बेरोजगारों का शहर की ओर पलायन, जो कि भारत की ज्वलंत समस्या है, का निराकरण सिर्फ कुटीर उद्योग लगाकर ही किया जा सकता है।

भारतीय साहित्य की युवा पीढ़ी हमेशा से गांधी दर्शन से प्रभावित रही है। उस समय के साहित्य पर गांधी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती, प्रेमचंद की रंगभूमि, माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा, रामधारी सिंह दिनकर की मेरे नगपति मेरे विशाल, सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी आदि साहित्यिक रचनाएं गांधी दर्शन से ही प्रेरित रही हैं।मनुष्य प्रजाति की उत्पति से लेकर आज तक की सारी मानवता व्यक्तिगत, सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति के लिए प्रयासरत रही है। गांधी का मानना था कि समाज में शांति की स्थापना तभी संभव है, जब व्यक्ति भावनात्मक समानता एवं आत्मसंतोष को प्राप्त कर लेगा। गांधी के अनुसार शांति की प्राप्ति प्रत्येक युवा का भावनात्मक एवं क्रियात्मक लक्ष्य होना चाहिए तभी उसकी ऊर्जा, गतिशीलता एवं उत्साह राष्ट्रीय हित में समर्पित होंगे।गांधी युवाओं को सामाजिक परिवर्तन का

सबसे बड़ा औजार मानते थे। वे हमेशा चाहते थे कि सामाजिक परिवर्तनों, सामाजिक कुरीतियों, सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था के उन्मूलन के विरुद्ध युवा आवाज उठाएं। उनका मानना था कि शोषणमुक्त, स्वावलंबी एवं परस्परपोषक समाज के निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका है एवं भविष्य में भी होगी। वर्तमान युवा प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं तथ्यपरक सिद्धांतों को मानता है।

गांधी हमेशा आत्मनिरीक्षण के पक्षधर रहे हैं। गांधी के सिद्धांत भी लोकतंत्र एवं सत्य की कसौटी पर कसे–खरे सिद्धांत हैं। गांधी की असहमति, उनका बोला गया सत्य आज के युवा को बेचौन कर देता है। उनकी आस्थाएं अडिग हैं। उन्होंने हर विश्वास को बड़ी जांच–परखकर व्रत की तरह धारण किया था। उन्होंने युवाओं के लिए स्वराज को सबसे बड़ा आत्मानुशासन, सत्याग्रह को सबसे बड़ा व्रत, अहिंसा को सबसे बड़ा अस्त्र एवं शिक्षा को सबसे बड़ी नैतिकता माना है।

जो छात्र महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, आईटी प्रोफेशनल एवं मेडिकल क्षेत्र में पढ़ रहे हैं या अपनी सेवाएं दे रहे हैं, से बातचीत के दौरान प्रश्न किया गया कि आपके दैनिक जीवन में गांधीके दर्शन की क्या प्रासंगिकता है? उनका मानना था कि आज प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्षेत्रों में मानसिक दबाव बहुत है। जब भी काम या पढ़ाई का बोझ उन्हें मानसिक या शारीरिक रूप से शिथिल करता है तो वे लोग गांधी की जीवनी 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पढ़ते हैं जिससे उनके अंदर आत्मबल एवं ऊर्जा का संचार होता है।

आज भारत में युवाओं के सामने ऐसे आदर्श व्यक्तित्वों की कमी है जिसे वो अपना रोल मॉडल बना सकें। गांधी हर पीढ़ी के युवाओं के रोल मॉडल रहे हैं एवं होने चाहिए। आज हमारा समाज सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। इन सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा देने में गांधी के सिद्धांत एवं उनका दर्शन हमारे युवाओं के मार्गदर्शक होने चाहिए।

आज हमारे युवाओं को मौका है कि वे गांधी को अपना आदर्श बनाकर सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। हमारे युवा उनके दर्शन को अपनाकर अपने व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के विकास में पूर्ण ऊर्जा एवं उत्साह से समर्पित हों।

''मेरा दावा उस वैज्ञानिक से जरा भी अधिक नहीं है जो अपने प्रयोग अत्यंत शुद्ध ढंग से, पहले अच्छी तरह सोच–समझ कर और पूरी बारीकी से करता है फिर भी उससे प्राप्त निष्कर्षों को अंतिम नहीं मानता बल्कि उनके बारे में अपना दिमाग खुला रखता है। मैं गहरी आत्म–निरीक्षण की प्रक्रिया से गुजरा हूं, मैंने प्रत्येक मनोवैज्ञानिक स्थिति को परखा और उसका विश्लेषण किया है। इसके बावजूद मैं अपने निष्कर्षों के अंतिम और अचूक होने के दावे से बहुत दूर हूं।'' ('आत्मकथा' की प्रस्तावना से)

''इस किताब ('हिंद स्वराज') में 'आधुनिक सभ्यता' पर सख्त टीका की गई है। यह 1909 में लिखी गई थी। इसमें मेरी जो मान्यता प्रगट की गई है, वह आज पहले से ज्यादा मजबूत बनी है। मुझे

लगता है कि अगर हिंदुस्तान 'आधुनिक सभ्यता' का त्याग करेगा, तो उससे उसे लाभ ही होगा।'' (1921 में 'यंग इंडिया' में लिखी टिप्पणी से)

गांधी ने आधुनिक औद्योगिक सभ्यता (जिसे अपने समय में वे सौ–पचास वर्ष पुरानी मानते थे और यूरोप में उसके वैकल्पिक चिंतन की सशक्त उपस्थिति स्वीकार करते थे) का विकल्प प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत विकल्प इस मायने में मुकम्मल है कि उसमें गांधी ने विकल्प की विचारधारा और अन्याय के प्रतिरोध की कार्यप्रणाली अथवा रास्ता दोनों बताए हैंय साधन और साध्य को परस्परावलंबित मानते हुए दोनों की एक–सी पवित्रता का स्वीकार किया हैय और अपने जीवन में उन विचारों और रास्ते का पालन करने का निरंतर प्रयोग भी किया है। हालांकि वे यह स्वीकार नहीं करते कि उन्होंने पूर्ण सत्य पा लिया है। वे मानते हैं उनकी पहुंच केवल सापेक्ष सत्य तक हो पाई है। स्वराज्य के बारे में भी उनका कहना है कि आजादी के साथ जो मिलने जा रहा है, वह उनके सपनों का स्वराज्य नहीं, इंग्लैंड के संसदीय लोकतंत्र का एक रूप होगा। लेकिन पूर्ण सत्य और स्वराज्य की दिशा में वे निरंतर प्रयासरत रहे।

निष्कर्षतः आधुनिक समाज सहज मानवीय स्वभाव का परिचायक न होकर बनावटीपन और कृत्रिमता की वकालत करने लगा है। गांधी आधुनिक समाज के इसी बनावटीपन के विरोधी थे। आधुनिक समाज अपनी असहजता में अपनी हिंसा की प्रवृत्ति और परिग्रह प्रेम में अपनी सहज स्वाभाविक प्रवृतियों को भूल गया है। नैतिक मूल्य जो मनुष्य के वास्तविक स्वभाव की ओर संकेत करते हैं, जब तक मनुष्य नहीं अपनाता वह मुक्त नहीं हो सकता। गांधी इसी मुक्ति के लिए इंसानियत विरोधी प्रवृत्तियों के खिलाफ बराबर लड़ते रहे। आज भी ठीक इसीलिए प्रासंगिक हैं कि अभी यह लड़ाई खत्म नहीं हुई है, बल्कि इसे और शिद्दत के साथ लड़ा जाना है। गांधीवादी विचारधारा ने ऐसे संस्थानों और कार्यप्रणालियों के निर्माण को आकार दिया जहाँ सभी की आवाज और परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया जा सकता है। उनके अनुसार, लोकतंत्र ने कमजोरों को उतना ही मौका दिया, जितना ताकतवरों को। उनके स्वैच्छिक सहयोग, सम्मानजनक और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के आधार पर कार्य करने के सुझाव को कई अन्य आधुनिक लोकतंत्रों में अपनाया गया। साथ ही, राजनीतिक सहिष्णुता और धार्मिक विविधता पर उनका जोर समकालीन भारतीय राजनीति में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखता है। सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और सत्याग्रह तथा उनके महत्त्व से गांधीवादी दर्शन बनता है और ये गांधीवादी विचारधरा के चार आधार हैं।

सन्दर्भ :

* 'आत्मकथा' की प्रस्तावना से प्रसंग लिया गया है।

* एध्रुच, केविन, (1998) : संस्कृति और संघर्ष संकल्प, संयुक्त राज्य अमेरिका शांति संस्थान, वाशिंगटन।
* क्रीजबर्ग, लुई, संघर्ष संकल्प में सत्य और नैतिकता को आगे बढ़ाने पर,
* कूवर, वर्जीनिया, डीकॉन, एलेन, एस्सेर, चार्ल्स, मूर, क्रिस्टोफर, (1985) : एक जीवित क्रांति के लिए संसाधन मैनुअल, न्यू सोसाइटी पब्लिशर्स, फिलाडेल्फिया।
* कोसर, लुईस, (1562) : द फंक्शन्स ऑफ सोशल कॉन्फ्लिक्ट, द फ्री प्रेस, फिलाडेल्फिया।
* गाल्टुंग, जोहान,(1992) : द वे इज द गोलः गांधी टुडे, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।
* गैंगरेड, केडी, और मिश्रा, आरपी, (1989) : कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन थ्रू अहिंसाः रोल ऑफ यूनिवर्सिटीज, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
* पेल्टन एच. लेरॉय,(1974) : अहिंसा का मनोविज्ञान, पेर्गमोन प्रेस इंक., न्यूयॉर्क।
* बोल्डिंग, एलिस, (1990) : एक अन्योन्याश्रित विश्व के लिए एक वैश्विक नागरिक संस्कृति शिक्षा का निर्माण, सिरैक्यूज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।
* बोल्डिंग ई.केनेथ, (1962) : कॉन्फ्लिक्ट एंड डिफेंस ए जनरल थ्योरी, हार्पर एंड रो, पब्लिशर्स, न्यूयॉर्क।
* वेबर, थॉमस, (1991) : कॉन्फ्लिक्ट रिजोल्यूशन एंड गांधीयन एथिक्स, द गांधी पीस फाउंडेशन, नई दिल्ली।
* शारोनी, सिमोना, (2000) : कॉन्फ्लिक्ट रिजॉल्यूशन एंड पीस मेकिंग फ्रॉम द बॉटम अपः द रोल्स ऑफ सोशल मूवमेंट्स एंड पीपल्स डिप्लोमेसी, डोजियर, आईयूपीआईपी इंटरनेशनल कोर्स, इटली।
* स्केलेनबर्ग, ए. जेम्स, (1996) : कॉन्फ्लिक्ट रेजोल्यूशनः थ्योरी, रिसर्च एंड प्रैक्टिस, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, अल्बानी
* स्प्रिंग, उर्सुला ओसवाल्ड, एड.,(2000) : पीस स्टडीज फ्रॉम ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव, मध्यम बुक सर्विसेज, नई दिल्ली।
* हिंद स्वराज' से प्रसंग लिया गया है।
* 1921 में 'यंग इंडिया' में लिखी टिप्पणी से प्रसंग लिया गया है।
* Dedring, Juergen, (1976): शांति और संघर्ष अनुसंधान में हालिया प्रगतिः एक महत्वपूर्ण सर्वेक्षण, ऋषि प्रकाशन, लंदन।
* Deutsch, एम, (1973): संघर्ष का संकल्प, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू हेवन।